REACH Lilly MDR-TB Partnership

Media Fellowship Programme

2010-11 FELLOW: AJAI RAI

Ajai Rai *is a senior journalist based in Varanasi. He works at the Hindi daily Amar Ujala and focuses on several issues including health and science. His stories have highlighted malnutrition and bonded labour as well as the cultural heritage of the oldest living city in the world, Varanasi.*

टीबी से खतरनाक डाट्स की चाल

अजय राय

वाराणसी। टीबी का अवसरवादी जीवाणु शरीर में चुपचाप बैठा रहता है और प्रतिरोधक क्षमता चूकने हमला बोल देता है। क्षय रोग विभाग ने बैक्टीरिया से यही अदा सीख ली है। डाट्स के तहत मुफ्त दवा के लिए क्षय रोगियों को दौड़ाकर पस्त कर दिया जा रहा है। रोज कमाने वाले मरीज का परिवार कुपोषण की गिरफ्त में आ जाता है। सिगरा के मरीज को दस दिनों तक कबीरचौरा दौड़ाया गया और राज्य क्षय अधिकारी से कहने पर दवा दी गई।

सिगरा के कस्तूरबा नगर कालोनी का शिवनारायण राम मजदूरी करके पांच व्यक्तियों का परिवार पालता है। उसकी बेटी नीलम को साल भर पहले टीबी हुई और वह ठीक हो गई। जून में उसका बेटा सागर बीमारी की चपेट में आय, जिसे सिगरा के भारत सेवाश्रम संघ सेंटर से दवा मिलनी चाहिए थी लेकिन 10 दिनों तक कबीरचौरा बुलाया जाता रहा। जिला क्षय रोग अधिकारी से शिकायत

दवा की दौड़ में बेदम हो जाता है कुनबा

करने पर सुपरवाइजर दवा लेकर पहुंचा। उसने संक्रमण से बचाने के लिए उसके चार साल के बेटे विशाल को आइसोनाइज्ड टेबलेट दी, जो अप्रैल में ही एक्सपायर हो गई थी। बालक के बदन पर फफोले पड़ गए और इस बीच उसकी बेटी नीलम को दोबारा टीबी हो गई। वह दवा लेने कबीरचौरा गई तो वहां के डाक्टर ने 255 रुपये का अनर्गल टानिक लिख दिया। उसे 18 अगस्त को वहीं से दवा दी जाने लगी और यह सिलसिला 26 तारीख तक जारी रहा। राज्य क्षय रोग अधिकारी डा. एनपी भारती और जिला क्षय रोग अधिकारी डा. बीएन सिंह से कहने पर 27 अगस्त को सुबह दवा भारत सेवाश्रम संघ भेजी गई। कर्मचारियों का तर्क है कि बच्चों के डोज का निर्धारण करने के लिए उन्हें जिला अस्पताल बुलाया जाता है। मगर एक दिन मरीज को स्ट्रेप्टोमाइसिन के इंजेक्शन की शीशी दे दी गई। उसने बाहर से सुई लगवाई। सवाल है कि किस डोज से दवा दी गई?

बुनकर कालोनी की नगमा भी दवा के लिए रोज 20 रुपये किराया देकर आती है। रिक्शा चालक राजेंद्र ने तो दवा लेना ही छोड़ दिया। बलगम की जांच, कार्ड बनवाने और दवा के लिए दौड़ लगाने में मजूरी तो जाती है। अस्पताल आने-जाने का खर्च कर्ज लेकर चुकाना पड़ता है। बेमतलब की टानिक लिख कर डाक्टर पूरे परिवार को भूख से मारने का इंतजाम कर दे रहे हैं। टीबी का जीवाणु कमजोर पर ही तो घात करता है।

"TB is not directly related to poverty, but it is a fact that the physically weak are more susceptible to the disease. This disease is troubling the weavers of Benares, not only upsetting their health status but also wrecking them financially. The poverty–stricken weavers of Kashi living in congested settlements are an easy prey for the disease... In Lohatha's 30 odd public health centers, more than 16% of its patients were found to be undergoing anti-tuberculosis treatment. More than 60 % of the people undergoing treatment in various health centers belong to the weaving community."

10 years REACH in the fight against TB

SPEAK UP TO STOP TB

THE Lilly MDR-TB PARTNERSHIP